International Journal of Physical Education, Sports and Health 2016; 3(5): 213-216

P-ISSN: 2394-1685
E-ISSN: 2394-1693
Impact Factor (ISRA): 5.38
IJPESH 2016; 3(5): 213-216
© 2016 IJPESH
www.kheljournal.com
Received: 09-07-2016
Accepted: 10-08-2016

Santosh Bapurao Yawale
Ph.D. Research Scholar, Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University, Nagpur, Maharastra, India

Dr. Pravin D Lamkhade
Director of Physical Education, Rani Indirabai Bhosle Mahavidyalaya, Kuhi, Nagpur, Maharastra, India

Correspondence
Santosh Bapurao Yawale
Ph.D. Research Scholar, Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University, Nagpur, Maharastra, India

पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाएँ जाने वाले योग केन्द्रो का सर्वेक्षण

Santosh Bapurao Yawale and Dr. Pravin D Lamkhade

सारांश
इस अध्ययन का प्रमुख हेतू पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाएँ जाने वाले योग केन्द्रो का सर्वेक्षण करना था तथा इसके गौण उद्देश्य: 1. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाएँ जाने वाले योग केन्द्रो का पता लगाना था । 2. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो में कितने योगार्थियों की संख्या रहती है यह ज्ञात करना था । 3. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाएँ जाने वाले योग केन्द्रो में कितने महिलाओं का समावेश है यह ज्ञात करना था । 4. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाएँ जाने वाले योग केन्द्रो में कितने पुरूषो का समावेश है यह ज्ञात करना था । 5. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाएँ जाने वाले योग केन्द्र का समय ज्ञात करना था । इस अनुसंधान कार्य में आंकडों के स्त्रोत के रूप में पूर्व महाराष्ट्र राज्य के अन्तर्गत आने वाले (नागपूर, अमरावती, अकोला, भंडारा, बुलढाणा, चंद्रपूर, धूळे, गडचिरोली, गोंदिया, हिंगोली, जळगाव, लातूर, नंदूरबार, नाशिक, वर्धा, वाशिम, यवतमाळ और नांदेड आदि) 18 जिलो में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाएँ जाने वाले योग केन्द्रो में से योगार्थीओं को आंकडों के स्त्रोत के रुप में लिया गया । 18 जिलो में से पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाएँ जाने वाले योग केन्द्र में से योगार्थिओं को जनसंख्या के रुप में लिया गया । यह अनुसन्धान कार्य करने के लिए उपलब्ध नमूना विधि द्वारा विषयों का चयन किया गया । अनुसंधानकर्ता ने पतंजलि योगपीठ का पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योग द्वारा चलाएँ जानेवाले योग केन्द्रो का सर्वेक्षण करणे के लिए आंकड़ों का संकलन प्रश्नावली, साक्षात्कार (मुलाकात) एवं व्यक्तिगत अवलोकन के माध्यम से किया गया । प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत प्रमान का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकडों के सांख्यिकीय विश्लेशण से जो परिणाम समक्ष आये उन परिणामों के आधार पर यह निष्कष समक्ष आए की, 1. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले 642 योग केन्द्रो है ।, 2. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो में कितने 19,987 योगार्थियों की संख्या है । 3. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो में 7365 महिलाओं का समावेश है । 4. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो में 12622 पुरूषो का समावश है । 5. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्र का समय सुबह का है ।

मूल शब्द: पूर्व महाराष्ट, पतंजलि योगपीठ, योग केन्द्रो का सर्वेक्षण

प्रस्तावना
योगाभ्यास अथवा योगसाधना का मुख्य आधार शरीर है। शरीर के माध्यम से ही साधक अन्यान्य यौगिक क्रियाओं का अभ्यास कर सकता है। अतः योगभ्यास या योग की साधना के लिए शरीर का स्वास्थ रहना अत्ययन्त आवश्यक है। रोगी या अस्वस्थ शरीर के द्वारा योगाभ्यास किया जाना सम्भव नहीं है। यद्यपि यह सही है कि योगशास्त्र की आधारभूत पृष्ठभूमि दार्शनिक विचारधारा से अनुप्रणित है और उसका सम्पूर्ण अन्तः बाहय कलेवर आध्यात्मिक दृष्टिकोण से परिवेष्टित है, जबकि स्वास्थ्य साधन या स्वास्थ्य रक्षा का उद्देश्य केवल भौतिक उपलब्धि है। आध्यात्मिक या दार्शनिक दृश्टी से मानव शरीर एक भौतिक संगठनात्मक द्रव्य है जा वृद्वि और क्षय का प्राप्त होता हुआ अन्त में विनाश को प्राप्त होता है, अतः वह नाशवान् है। यह मानव शरीर हड्डियों का एक ऐसा ढांचा है जो मांस और मेद से आवृत है। त्वचा इसका बाह्य आवरण है जो बाह्य आघातों, शीत, आतप, वर्शा और जीव जन्तुओं द्वारा भक्षण से इसकी रक्षा करती है। रस–रक्त इसे पोशण प्रदान करते है तथा मज्जा–शुक्र इसमें शक्ति का संचार करते हैं। ये सभी वस्तुए भौतिक और क्षय को प्राप्त होने वाली होने से नाशवान हैं। [1] पतंजलि योगपीठ के माध्यम से जब से योग की व्यापक जन क्रांति हुई प्राणायाम के प्रयोग व प्रभाव से लाखों, करोडों लोगों की सब व्याधियों का समाधान हुआ तो देष के कोटि–कोटि जनों ने योग को स्वीकार कर लिया और आज राष्ट्र के शून्य से शिखर तक अधिकांश लोग योग को

कमावेश अपनी जीवनशैली मे आत्मसात कर चुके है यह एक ऐतिहासिक घटना है। जब देश के गरीब, मध्यम एवं उच्चवर्ग के लोगों ने एक साथ व्यापक रूप में एक संस्कृति को अंगीकार कर लिया हो यह भी सत्य है कि जब तक योग पर क्लिनिकल कन्ट्रोल ट्रायल का दौर पूरा नहीं हो जाता तब तक कुछ स्वार्थी व दुराग्रही लोग आरोप–प्रत्यारोप की निकृष्ट राजनीति भी जारी रखेंगे। यद्यपि इससे भी योग को और अधिक व्यापक स्विकृति ही मिलेगी। हमने अभी तक जो प्रयोग किए है वे इस बात के प्रमाण है कि योग से विष्व की तमाम समस्याओं का समाधान हो सकता है। प्रयोग, परिणाम एवं प्रयास–यह एक क्रम है सत्य तक पहुंचने का। हम योग एवं आयुर्वेद को एक (Evidence based medicine) प्रयोग सिध्द औशधि की तरह विष्व पटल पर स्थापित करने के लिए कृत संकल्प है।

आज आम आदमी से लेकर उच्च पदासीन व्यक्ति ने भी पूज्य श्रध्देय स्वामी रामदेव जी महाराज से योग की शिक्षा, दीक्षा ली है एवं ले रहे है। अनेक न्यायाधीशों, सैनिक एवं अर्धसैनिक बलों पुलिस एवं प्रशासन से जुडे तमाम छोटे बडें लोगों ने प्राणायाम सहित योग की सहज विधियों को सीखकर उसे व्यवस्था मे लागू करने के प्रयास प्रारम्भ कर दिए है। प्रिन्ट मीडिया एवं इलैक्ट्रोनिक मीडिया ने योग को राष्ट्र व्यापी विस्तार देने में अहम् भूमिका निभाई है। बच्चे से लेकर बूढे तक प्रत्येक आयु, वर्ग, मत, पंथ एवं सम्प्रदायों ने योग को स्विकार किया है। राजसत्ता एवं धर्मसत्ता से जुडी देष की महान विभूतियों से सीधा संवाद स्थापित कर श्रध्देय स्वामी जी ने विश्व की आध्यात्मिक एवं सात्त्विक शक्तियों को संगठित करने का एक अभूतपूर्व कार्य किया है।

योग को विश्वव्यापी बनाने की दिषा में एक बडी कार्य योजना चल रही है। यू.के. एवं यू.एस.ए.के बाद अब दुनिया के अधिकांष देशों मे पतंजलि योग पीठ के प्रशिक्षित योग शिक्षक निःस्वार्थ भाव से योग की शिक्षा दे रहे है। भारत के लगभग हर जिले में पतंजलि योग प्रशिक्षण समितियां पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण से अपना अपना दायित्व निभा रही है। हमारा लक्ष्य है कि वर्ष 2007 एवं 2008 में पूरे भारत सहित सम्पूर्ण विश्व में 5 से 10 लाख मुख्य एवं सहयोगी प्रशिक्षक तैयार हो जायेगें। आप और हम मिलकर एक स्वस्थ भारत एवं स्वस्थ विश्व के निर्माण के लक्ष्य को शिघ्र ही प्राप्त कर सकेंगें। दैहिक आरोग्य के साथ–साथ योग से स्वस्थ चिन्तन, स्वस्थ विचार, सम्यक एवं पवित्र व्यवहार का कार्य स्वतः प्रतिफलित हो रहा है। हम आशवस्त है कि योग शीघ्र ही वैश्विक संस्कृति का हिस्सा बनेगा और पूरा विश्व भारतीय जीवनदर्शन को वैज्ञानिक मानदण्डों के साथ स्वीकार करेगा। यह हम भारतीयों के लिए गर्व की बात होगी ओर विश्व कल्याण व विश्वशान्ति का मार्ग भी इसी से प्रशस्त होगा। योग से एक स्वस्थ व संवेदनशील समाज, राष्ट्र एवं विश्व का निर्माण होगा। शरीर एवं मन से स्वस्थ व संवेदनशील व्यक्ति हिंसा, अपराध, जातिवाद, प्रान्तवाद एवं मजहबी उन्माद से दूर होगा और संसार में मानवता, प्रेम, शान्ति, सौहार्द, सेवा, सद्भावना व सहिष्णृता का वातावरण तैयार होगा, धरती पर स्वर्ग का अवतरण होगा। विज्ञान एवं अध्यात्म के एक साथ मिलन से विकास में विनाश का खतरा नहीं होगा।

स्वामी जी का सम्पूर्ण योगान्दोलन जिस सूत्र से संचालित है वह है 'सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः–सब सुखी हो सभी निरोग हों। न किसी को भय हो न विपन्नता। इसी के लिए स्वामी जी योगशिविरों के रूप में अल सुबह अलख जगाने निकल पडतें है। देश–विदेश में अब तक शताधिक अति विशाल योगशिविरों का आयोजन किया जा चुका है। इन शिविरों का उद्देश्य समग्र मानवता को स्वस्थ करना, बीमारियों के संत्रास से मुक्त कर उन्हें पुश्ट और संतुश्ट जीवन प्रदान करना है। स्वामी जी का यह भी सपना है कि भारत अपनी सनातन गुरु की प्रतिश्ठा को पुःन प्राप्त करे और मानवता को जीवन के परम लक्ष्य का रास्ता दिखा कर उसका जीवन धन्य बनाएं। बाहुबल के जरिए विश्व पर छा जाना मानवीय सिध्दान्त नहीं हो सकता। विश्व गुरु की बात के पीछे चिन्तन यह है कि भारत अध्यात्म के रूप में पहचाने गए अपने वैश्विक मानवीय मूल्यों के प्रसार हेतु कार्य करते हुए विभिन्न प्रकार के दबावों और अभावों की चोट झेल रही मानवता का सम्बल बने एवं उसे नेतृत्व दें।

देश के प्रतिश्ठित समाजसेवी हों या बुध्दिजीवी अभिनेता हो या अभिनेत्रियां, व्यापारी हों या उद्योगपति, अधिकारी हों या राजनेता, पक्ष हो या प्रतिपक्ष, यदि देश की सभी प्रतिस्पर्धाओं को मिटाकर एक मंच पर आकर सुर में सुर मिलाएं तो समझ लीजिए वह है योग महर्शि स्वामी रामदेवजी का ''योग मंच''। आज तक स्वामी जी महाराज का जहॉ कहीं भी योग का कार्यक्रम होता है, सभी स्थानों पर अधिकतम अतिविशिश्ट जनों की उपस्थिति अवश्य रहती है, यदि किन्हीं कारणवश वे वहॉ उपस्थित न भी हुए तो व्यक्तिगत रूप से उन लोंगो ने स्वामीजी से मिलकर योग विद्या से लाभ उठाया है।

स्वामीजी के प्रयासों से न केवल भारत अपितु विश्व भर के शीर्श लोग तीव्रता से आज योग की ओर आकृश्ट हुए है। स्वामीजी के विश्व व्यापी अभियान के कारण ही आज अनेक वैश्विक संस्थाए विभिन्न प्रकल्पों के लिए स्वामी जी से आह्वान कर रही हैं। भारत के महामहिम राश्ट्रपति व उपराश्ट्रपती सहित विभिन्न शिर्श सत्तासीन प्रबुध्द व्यक्ति सहित नोवल विजेता हैरी क्रोटो से लेकर ब्रिटेन की स्वास्थ मंत्री सुश्री पेट्रीसिया हैविट तक ने स्वामी जी से योग के विभिन्न प्रभावों पर सार्थक संवाद किया है। यूनेस्को जैसी वैश्विक संस्था ने गरीबी मिटाओ आदोंलन में स्वामी जी से आह्वान करने की अपील की है।

स्वामी रामदेव जी द्वारा योग, प्राणायाम, आयुर्वेद एवं भारतीय मूल्यों की स्थापना पर किया गया अध्ययन बतात है कि किस तरह उन्होंने मीडिया से लेकर विश्व जनमानस को झकझोर कर रख दिया है। कोई इसे आश्चर्यजनक बतात है तो कोई इसे दैवीय, तो कोई खगोलीय घटना जैसा विस्मयपूर्ण। आज स्वामी रामदेव एक महामना माने जाते है एवं उनकी योग क्रांति मर्ज और कर्ज से सिसकती, दम तोडती मानवता के लिये संजीवनी लेकर आई है। स्वामी जी की दिव्य दृश्टि से कराडों का देह देवालय बना तो करोडों ने नवजीवन के सृजन का संकल्प लिया। स्वामी जी के अभियान ने निराश समाज में नई उर्जा का संचार एवं नवजीवन सा उत्साह भर दिया है।

साथ ही यह कहना अतिशयोक्ति नही होगा कि जनमानस के उर्वरक पटल पर रोपित इस योग संस्कृति में जन संवाद एवं मीडिया की सार्थक एवं उल्लेखनीय भूमिका भी रही है। मीडिया ने भी अपना दृश्टीकोण बदला, अपनी उपयोगी एवं जिम्मेदार भूमिका को पहचाना तथा स्वामी जी द्वारा निर्देशित जनहित के महान कार्य को संवादसूत्र प्रदान किया। सीधे ही अगर निम्न तथ्यों का अध्ययन कर देख लें तो इस उपक्रम की व्यापकता एवं गहराई का आभास हो जायेगा। साथ ही स्वामी जी द्वारा ऋशि संस्कृति से लेकर कृशि क्रांति तक को आहूत करने की दूरगामिता का ज्ञान भी। ख्2,

समस्या का कथनः पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो का सर्वेक्षण

समस्या के उद्देश्य

1. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो का पता लगाना था ।
2. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो में कितने योगार्थियों की संख्या रहती है यह ज्ञात करना था ।
3. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो में कितने महिलाओं का समावेश है यह ज्ञात करना था ।
4. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो में कितने पुरूषो का समावेश है यह ज्ञात करना था ।
5. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्र का समय ज्ञात करना था ।

कार्यपध्दति

आकडों के स्त्रोत

इस अनुसंधान कार्य में आंकडों के स्त्रोत के रूप में पूर्व महाराष्ट्र राज्य के अन्तर्गत आनेवाले (नागपूर, अमरावती, अकोला, भंडारा, बुलढाणा, चंद्रपूर, धूळे, गडचिरोली, गोंदिया, हिंगोली, जळगाव, लातूर, नंदूरबार, नाशिक, वर्धा, वाशिम, यवतमाळ और नांदेड आदि) 18 जिलो में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाएँ जाने वाले योग केन्द्रो में से योगार्थीओं को आंकडों के स्त्रोत के रुप में लिया गया ।

जनसंख्या

पूर्व महाराष्ट्र के अन्तर्गत आनेवाले (नागपूर, अमरावती, अकोला, भंडारा, बुलढाणा, चंद्रपूर, धूळे, गडचिरोली, गोंदिया, हिंगोली, जळगाव, लातूर, नंदूरबार, नाशिक, वर्धा, वाशिम, यवतमाळ और नांदेड आदि) 18 जिलो में से पतंजलि योगपीठ द्वारा चलएँ जानेवाले योग केन्द्र में से योगार्थिओं को जनसंख्या के रुप में लिया गया ।

न्यादर्श की विधि

यह अनुसन्धान कार्य करने के लिए उपलब्ध नमूना विधि द्वारा विषयों का चयन किया गया ।

आंकड़े प्राप्त करने की सहायक सामग्री

इस अध्ययन में आंकड़े प्राप्त करने के लिए अनुसंधानकर्ता ने प्रमुख दो सहायक सामग्रियों का उपयोग किया, जिसमें स्वयं निर्मित प्रश्नावली और साक्षात्कार (मुलाकात) सम्मिलित थे ।

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण

अनुसंधानकर्ता ने पतंजलि योगपीठ का पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योग द्वारा चलाएँ जानेवाले योग केन्द्रो का सर्वेक्षण करणे के लिए आंकड़ों का संकलन प्रश्नावली, साक्षात्कार (मुलाकात) एवं व्यक्तिगत अवलोकन के माध्यम से किया गया । प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत प्रमान का प्रयोग किया गया।

सारणी 1: पतंजली योगपीठ द्वारा पूर्व महाराष्ट्र के जिलों में स्थापीत कुल योग केन्द्रों की संख्या व प्रतिशत प्रमाण दर्शानेवाली सारणी

जिले	जिलों में योग केन्द्रों की संख्या	योग केन्द्रों का प्रतिशत प्रमाण
नागपूर	82	12.77
अमरावती	91	14.17
अकोला	34	5.30
भंडारा	16	2.49
बुलढाणा	19	2.96
चंद्रपुर	75	11.68
धूळे	5	0.78
गडचिरोली	24	3.74
गोंदिया	38	5.92
हिंगोली	7	1.09
जळगाव	20	3.12
लातूर	49	7.63
नंदूरबार	11	1.71
नाशिक	58	9.03
वर्धा	24	3.74
वाशिम	22	3.43
यवतमाळ	47	7.32
नांदेड	20	3.12

उपरोक्त सारणी क. 1 में पतंजली योगपीठ द्वारा पूर्व महाराष्ट्र के जिलों मे स्थापीत कुल योग केन्द्रों की संख्या एवं प्रतिशत प्रमाण दर्शाया गया है । सारणी के सूक्ष्म अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि कुल 642 योग केन्द्रों की स्थापना हुई है। जिस में नागपूर 82 (12.77), अमरावती 91 (14.17), अकोला 34 (5.30), भंडारा 16 (2. 49), बुलढाणा 19 (2.96), चंद्रपूर 75 (11.68), धूळे 5 (0.78), गडचिरोली 24 (3.74), गोंदिया 38 (5.92), हिंगोली 7 (1.09), जळगाव 20 (3.12), लातूर 49 (7.63), नंदूरबार 11 (1.71), नाशिक 58 (9.03), वर्धा 24 (3.74), वाशिम 22 (3.43), यवतमाळ 47 (7.32) तथा नांदेड 20 (3.12) स्थापना हुई है । सबसे अधिक अमरावती जिले में योग केन्द्रों की स्थापना हुई है ।

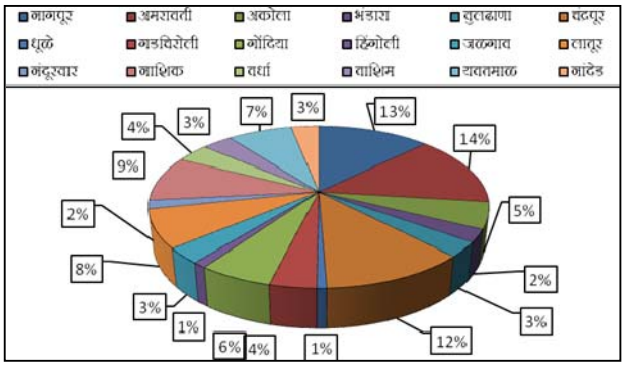

आलेख 1: पतंजली योगपीठ द्वारा पूर्व महाराष्ट्र के जिलों में स्थापीत कुल योग केन्द्रों की प्रतिशत प्रमाण दर्शानेवाला आलेख

सारणी 2: पतंजली योगपीठ द्वारा पूर्व महाराष्ट्र के जिलों में साल 2000–03, 2004–07, 2008–11, 2012–15 में स्थापीत कुल योग केन्द्रों की संख्या व प्रतिशत प्रमाण को दर्शानेवाली सारणी

सत्र	योग केन्द्रों की संख्या	प्रतिशत प्रमाण
2000–2003	7	1.09
2004–2007	71	11.06
2008–2011	254	39.56
2012–2015	310	48.29

उपरोक्त सारणी क.–2 में पतंजली योगपीठ द्वारा पूर्व महाराष्ट्र के जिलों में साल 2000–03, 2004–07, 2008–11, 2012–15 में स्थापित कुल योग केन्द्रों की संख्या तथा प्रतिशत प्रमाण दर्शाया गया है । सारणी के सूक्ष्म अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि कुल 642 योग केन्द्रों की स्थापना हुई है। जिस में साल 2000–2003 में 7 (1.09), साल 2004–2007 में 71 (11.06), साल 2008–2011 में 254 (39.56) तथा साल 2012–2015 में 310 (48.29) योग केंन्द्रो कि स्थापना हुई है । उपरोक्त योग केन्द्रो की संख्या के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि, सत्र के अनुसार संख्या में वृध्दी होते हुए दिखाई दे रही है । इससे यह ज्ञात होता है की, पतंजली योगपीठ द्वारा पूर्व महाराष्ट्र के जिलों में दिन–प्रतिदीन योग के विकास तथा जनजागृति का स्तर बढ रहा है ।

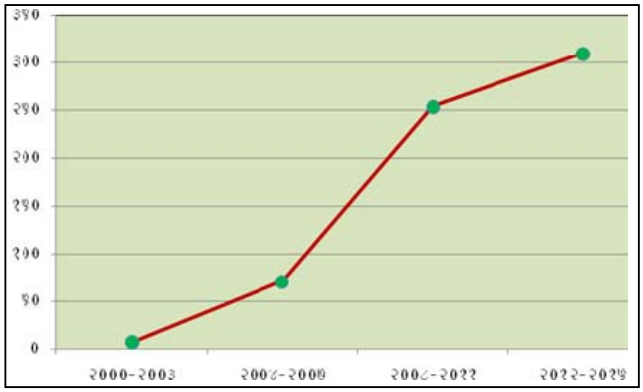

आलेख 2: पतंजली योगपीठ द्वारा पूर्व महाराष्ट्र के जिलों में साल 2000–03, 2004–07, 2008–11, 2012–15 में स्थापीत कुल योग केन्द्रों की प्रमाण को दर्शानेवाला आलेख

सारणी 3: पतंजली योगपीठ द्वारा पूर्व महाराष्ट्र के जिलों में योगार्थियों की संख्या व प्रतिशत प्रमाण को दर्शानेवाली सारणी

महिलाओं	प्रतिशत प्रमाण	पुरूषो	प्रतिशत प्रमाण	कुल
7365	36.849	12622	63.151	19987

उपरोक्त सारणी क्र.–3 में पतंजली योगपीठ द्वारा पूर्व महाराष्ट्र के जिलों में योगार्थियों की संख्या संख्या व प्रतिशत प्रमाण दर्शाया गया है । सारणी के सूक्ष्म अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि कुल 19987 योगार्थियों की संख्या है। जिस में 7365 (36.849) महिलाओं का समावेश है और 12622 (63.151) पुरूषों का समावेश है । उपरोक्त संख्या के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि, पतंजली योगपीठ द्वारा पूर्व महाराष्ट्र के जिलों में दिन–प्रतिदीन योग के विकास तथा जनजागृति का स्तर बढ रहा है ।

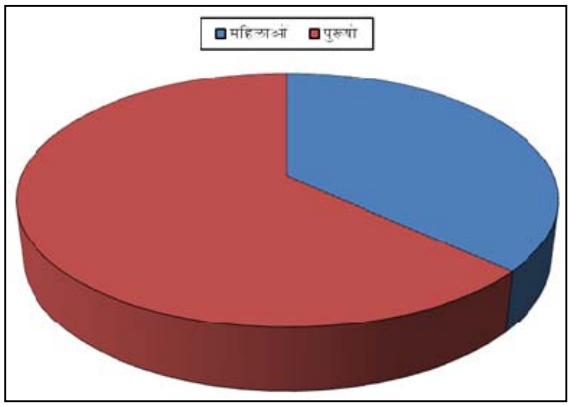

आलेख 3: पतंजली योगपीठ द्वारा पूर्व महाराष्ट्र के जिलों में योगार्थियों की प्रमाण को दर्शानेवाला आलेख

निष्कर्ष:

1. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले 642 योग केन्द्रो है ।
2. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो में कितने 19,987 योगार्थियों की संख्या है ।
3. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो में 7365 महिलाओं का समावेश है ।
4. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्रो में 12622 पुरूषो का समावेश है ।
5. पूर्व महाराष्ट्र में पतंजलि योगपीठ द्वारा चलाए जाने वाले योग केन्द्र का समय सुबह का है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य बालकृष्ण. विज्ञान की कसौटी पर योग. दिल्लीः दिव्य प्रकाशन, 2007.
2. कोगलर, एलडर. खिलाडियों के लिए योग. नई दिल्लीः फूजन बुक्स, 2007.
3. राय, पारसनाथ. अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 2002.
4. रामदेव, स्वामी. प्राणाय रहस्य (वैज्ञानिक तथें के साथ). दिल्लीः दिव्य प्रकाशन, 2009.
5. शास्त्री, विजपाल. योग विज्ञान प्रदीपिका. नई दिल्लीः पब्लिशिंग हाऊस, 2006.
6. शास्त्री, सुरेशचन्द्र. श्रीवास्तव पातञ्जलोगदर्शन. वाराणसीः चौखम्बा सुरभारती प्रकाशक, 2006.
7. शर्मा, आर. ए. शिक्षा अनुसन्धान. मेरठः आर. झाल बुक डिपो, 2009.